IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, October 2026
Impact Factor: 8.2

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

सुभाष चंद्र पाल[1] एवं डॉ. शालिनी पाण्डेय[2]

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, आजीवन शिक्षा प्रसार एवं समाज कार्य अध्ययनशाला

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)भारत[1]

प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, जैन कॉलेज, ग्वालियर (म.प्र.), भारत[2]

scpal22888@gmail.com and dr.shalinidixit30gmail.com

सारांश:

प्रस्तुत शोध पत्र में शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के लिंग के आधार पर महिला व पुरुष अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले के शासकीय विद्यालयों के 300 (150 पुरुष व 150 महिला) अध्यापकों तथा अशासकीय विद्यालयों के 300 (150 पुरुष व 150 महिला) अध्यापकों का चयन किया गया है, इस प्रकार कुल 600 अध्यापकों को शोध अध्ययन में सम्मिलित किया गया हैं। अध्यापकों की कार्य संतुष्टि मापने हेतु डॉ. अमर सिंह एवं डॉ. टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित मानकीकृत कार्य संतुष्टि मापनी को प्रशासित किया गया, प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं है अथवा महिला एवं पुरुष उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है इस प्रकार हम कह सकते हैं। कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई अंतर नहीं है लगभग समान कार्य–संतुष्टि का अनुभव करते हैं एवं लिंग के आधार पर महिला एवं पुरुष अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है, लगभग समान कार्य संतुष्टि का अनुभव करते हैं, यह समानता के दृष्टिकोण से काफी सकारात्मक हैं।

बीज शब्द: उच्च माध्यमिक शिक्षा, उच्च माध्यमिक विद्यालय, अध्यापक, कार्य संतुष्टि,

प्रस्तावना:

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास की आधारशिला है। इस विकास प्रक्रिया में अध्यापक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वह केवल पाठ्यक्रम का संचारण ही नहीं करता, बल्कि विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, मूल्य बोध एवं भविष्य के नागरिक तैयार करने में भी योगदान देता है। अध्यापन एक ऐसा व्यवसाय है जिसमें शारीरिक श्रम के साथ–साथ मानसिक संतुलन, सामाजिक उत्तरदायित्व और भावनात्मक संलग्नता की भी आवश्यकता होती है। इसलिए अध्यापक की कार्य संतुष्टि केवल उसके व्यक्तिगत कल्याण का विषय नहीं है, अपितु विद्यालय की गुणवत्ता और शिक्षा के परिणाम से भी सीधे जुड़ा हुआ पक्ष है। कार्य संतुष्टि से तात्पर्य उस मानसिक अवस्था से है, जिसमें व्यक्ति अपने कार्य, कार्यस्थल, सहकर्मियों, वेतन, सेवा शर्तों, प्रशासनिक सहयोग, पदोन्नति की संभावनाओं तथा सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रति सकारात्मक अनुभूति करता है। जब अध्यापक अपने कार्य में

आत्मसंतुष्ट महसूस करता है, तो वह अधिक लगन, ईमानदारी और उत्साह के साथ अध्यापन कार्य करता है। इसके विपरीत, असंतुष्ट अध्यापक में निराशा, तनाव, अरुचि एवं कार्य से दूरी बन सकती है, जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव विद्यार्थियों की प्रगति पर पड़ता है। अनुसंधानों में भी अध्यापकों की कार्य संतुष्टि और अध्यापन प्रभावशीलता के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया है। वर्तमान अध्ययन शासकीय तथा अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करने हेतु किया जा रहा है। यद्यपि दोनों प्रकार के विद्यालय शासकीय एवं प्रबंधन समिति के अंतर्गत आते हैं, फिर भी उनकी कार्यप्रणाली, विद्यार्थी स्तर, शैक्षिक जिम्मेदारियाँ, पाठ्यक्रम की जटिलता, परीक्षा दबाव तथा प्रशासनिक अपेक्षाओं में अंतर हो सकता है।

अध्ययन का महत्व:

उच्च माध्यमिक स्तर पर विषय–विशेषज्ञता, माध्यमिक शिक्षा परिषद की परीक्षा की तैयारी और विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण की जिम्मेदारी अधिक होती है। ऐसी स्थिति में यह जानना आवश्यक है कि दोनों स्तरों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में क्या समानताएँ अथवा भिन्नताएँ पाई जाती हैं। शासकीय विद्यालयों में सेवा सुरक्षा, नियमित वेतन, सामाजिक प्रतिष्ठा एवं सेवानिवृत्ति लाभ अध्यापकों को प्रेरित कर सकते हैं। इसके साथ ही कार्यभार, गैर–शैक्षणिक दायित्व, अवसंरचना की स्थिति, प्रशासनिक सहयोग और व्यावसायिक विकास के अवसर भी उनकी संतुष्टि को प्रभावित करते हैं। विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि कार्य वातावरण, वेतन, कार्य–जीवन संतुलन, मान्यता एवं प्रशिक्षण के अवसर अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के प्रमुख निर्धारक होते हैं। अतः केवल नियुक्ति या वेतन की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है अध्यापक को कार्यस्थल पर सम्मान, सहयोग और अर्थपूर्ण कार्य का अनुभव भी चाहिए। मध्य प्रदेश जैसे राज्य में, जहाँ शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय शहरी क्षेत्रों की शिक्षा व्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन और भी अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकता है। इससे यह समझने में सहायता मिलेगी कि अध्यापकों को किन परिस्थितियों से असुविधा होती है और विद्यालय प्रबंधन द्वारा किन बिंदुओं पर सुधार किया जा सकता है। इस अध्ययन के परिणाम शिक्षा विभाग, विद्यालय प्रधानाचार्यों एवं नीति–निर्माताओं के लिए व्यावहारिक संकेत प्रदान कर सकते हैं। इस प्रकार, प्रस्तुत अध्ययन शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के स्तर तथा उसमें आने वाले अंतर का वैज्ञानिक विश्लेषण करे। यह अध्ययन अध्यापकों की कार्यस्थिति को सुधारने, उनका मनोबल बढ़ाने तथा विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के वातावरण को सुदृढ़ करने में सहायक होगी।

समस्या कथन:

शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

शोध समस्या में प्रयुक्त चरों का स्पष्टीकरण:

उच्च माध्यमिक शिक्षा:

भारत के संदर्भ में (10+2) की अवधारणा माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का अंतिम चरण है, किन्तु फिर एक बार परिवर्तन नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में अब शिक्षा का स्ट्रक्चर एक बार बदला है (5+3+3+4) +4 को माध्यमिक शिक्षा के रूप में व्यक्त किया गया है इसके अंतिम चरण के दो वर्ष को उच्च माध्यमिक शिक्षा के रूप में जाना जाता हैं। उच्च माध्यमिक शिक्षा के अंतर्गत 16 वर्ष से 18 वर्ष के छात्र एवं छात्राओं को जो कक्षा 11 एवं 12 या उसके समकक्ष प्रदान की जाने वाली शिक्षण व्यवस्था से है। जो

10 वर्षों की प्राथमिक, माध्यमिक शिक्षा के बाद 2 वर्षों की वरिष्ठ माध्यमिक शिक्षा के रूप में विद्यार्थियों को विषय विशेष का ज्ञान व्यावसायिक कौशल और विश्वविद्यालय के लिए तैयार करती हैं।

परिभाषाएं:

यूनेस्को (**UNESCO**): के अनुसार, "उच्च माध्यमिक शिक्षा से तात्पर्य 16 से 18 वर्ष की उम्र के छात्रों को दी जाने वाली उसे शैक्षणिक निर्देश से हैं, जो एक डिप्लोमा पर समाप्त होती हैं। यह विभिन्न विषयों (विज्ञान, गणित, साहित्य, सामाजिक अध्ययन आदि) को शामिल करती हैं। जिसका उद्देश्य छात्रों को उच्च शिक्षा या व्यावसायिक प्रशिक्षण के लिए तैयार करना हैं।"

कोठारी आयोग (1964–66): भारतीय शिक्षा के संदर्भ में कोठारी आयोग के अनुसार, "माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा का उद्देश्य युवा वर्ग को ऐसे नागरिकों के रूप में विकसित करना है जो न केवल अपने उत्पादन और विकास में योगदान दें, बल्कि लोकतंत्र के मूल्यों, वैज्ञानिक सोच और नैतिक चरित्र को भी आत्मसात करें।"

मुदालियर आयोग (1952–53): के अनुसार, "माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर को ऐसा चरण माना हैं। जो छात्रों को नेतृत्व क्षमता, व्यावसायिक दक्षता और नागरिकता के उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए प्रशिक्षित करता है, ताकि वे केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित ना रहे बल्कि जीवनोपयोगी कौशल प्राप्त करें।

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री जॉन डी.वी. के अनुसार, "जब छात्र किशोरावस्था की जिज्ञासाओं को विशिष्ट ज्ञान और व्यावहारिक जिम्मेदारियों में बदलते हैं, जिससे वे अपने परिवेश को नियंत्रित करने में सक्षम होते हैं।

उच्च माध्यमिक अध्यापक:

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कार्य करने में संलग्न या शिक्षण कार्य को करने वाले शिक्षक उच्च माध्यमिक अध्यापक होते हैं। यह अध्यापक कक्षा 11वीं एवं 12वीं में अध्यापन कार्य करते हैं। उच्च माध्यमिक अध्यापकों की योग्यता परास्नातक और शिक्षा स्नातक (B-Ed) होते हैं। शासन द्वारा प्रदत्त पद को वर्ग 1 कहते हैं। इनकी चयन प्रक्रिया शासन द्वारा मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल (MPESB) द्वारा की जाती हैं। और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की नियुक्ति प्रबंधन समिति द्वारा की जाती हैं।

उच्च माध्यमिक विद्यालय:

इस प्रकार के विद्यालय में कक्षा 11 वीं एवं 12वीं की नियमित कक्षाएं संचालित होती हैं। यह विद्यालय प्राथमिक शिक्षा एवं माध्यमिक शिक्षा से ऊपर की शिक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी का निर्वाहन करते हैं। और उच्च शिक्षा या विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा की नर्सरी तैयार करने का दायित्व निर्वाहन करते हैं। जबकि शासकीय विद्यालय सरकार द्वारा पूर्ण वित्त सहित एवं दिशा निर्देश के अनुसार संचालित होते हैं। किंतु अशासकीय विद्यालय प्रबंध समिति के द्वारा स्वयं के वित्त द्वारा संचालित होते हैं, पर दिशा निर्देश सरकार द्वारा संचालित होते हैं दोनों प्रकार के विद्यालयों को मान्यता माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा प्रदान की जाती हैं। उनकी स्थिति के अनुसार दो भागों में विभाजित किया गया हैं।

शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय:

जो विद्यालय राज्य या केंद्र से वित्त सहित मान्यता की अवधारणा से स्थापित किए जाते हैं। ऐसे विद्यालयों में शासन का पूर्ण अधिकार होता है, वे नियुक्ति, प्रवेश, परीक्षा, भवन सभी पर शासन अपना अधिकार रखता हैं। यह जनमानस के पाल्यों के लिए एक समान शिक्षा व्यवस्था प्रदान करते हैं।

अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय:

इस प्रकार के विद्यालय प्रबंध समिति द्वारा वित्त एवं दिशा निर्देश का अनुपालन करते हैं। इस प्रकार के विद्यालयों के लिए भवन प्रबंध समिति द्वारा तैयार किया जाता हैं। इन विद्यालयों में विद्यार्थियों की मासिक शुल्क प्रबंध समिति द्वारा निर्धारित की जाती हैं। यह अपनी व्यवस्था स्वयं करते हैं परंतु शासन मान्यता एवं परीक्षा और अंक पत्र व प्रमाण पत्र शासन द्वारा निर्गत किए जाते हैं।

कार्य–संतुष्टि:

कार्य–संतुष्टि का मौलिक अर्थ हैं। कार्य–संतुष्टि व्यक्ति की वह मनोवैज्ञानिक एवं भावनात्मक स्थिति है, जो उसके कार्य से संबंधित अनुभवों, अपेक्षाओं, उपलब्धियों तथा कार्य–परिस्थितियों के मूल्यांकन से विकसित होती है। जब व्यक्ति अपने कार्य को अपनी आवश्यकताओं, मूल्यों और अपेक्षाओं के अनुकूल पाता है, तब उसमें संतुष्टि की अनुभूति विकसित होती है। इसके विपरीत, जब कार्य से प्राप्त अनुभव उसकी अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं होते, तो असंतुष्टि की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के संदर्भ में कार्य–संतुष्टि का तात्पर्य उस सीमा से है, अध्यापक अपने शिक्षण कार्य, विद्यालय के वातावरण, वेतन एवं अन्य सुविधाओं, प्रशासनिक सहयोग, सहकर्मियों के साथ संबंधों, व्यावसायिक स्वतंत्रता तथा शिक्षण के माध्यम से प्राप्त उपलब्धियों से संतुष्टि का अनुभव करते है। इस प्रकार, शिक्षक की कार्य–संतुष्टि को केवल नौकरी में बने रहने या आर्थिक लाभ प्राप्त करने तक सीमित नहीं किया जा सकता, बल्कि यह उसके कार्य के प्रति समग्र अनुभव और मूल्यांकन से संबंधित अवधारणा है। अपने कार्य के प्रति स्वयं सकारात्मक, भावनात्मक, प्रतिक्रिया से हैं। यह एक व्यक्ति की नौकरी या कार्य के अनुभवों के मूल्यांकन के परिणाम स्वरुप होने वाली सुखद एवं भावनात्मक अनुभूति को प्रदर्शित करता हैं। दूसरे पहलू से अगर हम देखें तो कार्य संतुष्टि अपने कार्य में आने वाली चुनौतियों को कितने सहज ढंग से हल करने का कौशल की परख से होती हैं। यह व्यक्तिगत रूप से अलग–अलग हो सकती हैं, यदि सकारात्मकता के साथ संस्थान पहल करता हैं। तो आवश्य कार्य संतुष्टि सुखद होगी।

अध्यापक की कार्य–संतुष्टि की विमा:

- वेतन एवं पदोन्नति
- नौकरी की शर्त व सुरक्षा
- अपने व्यवसाय व संस्था के प्रति रुचि
- सहभागी पाठ्यक्रम और सहभागी अन्य क्रियाएं
- प्रधानाचार्य एवं प्रबंध समिति व अध्यापकों में आंतरिक संबंध

कार्य–संतुष्टि के संबंध में परिभाषाएं:

एडविन ए.लोके (1969, 1976) लोक के अनुसार, "कार्य–संतुष्टि व्यक्ति के कार्य या कार्य–अनुभवों के मूल्यांकन से उत्पन्न होने वाली सुखद अथवा सकारात्मक भावनात्मक अवस्था है।"

रॉबर्ट हॉपॉक (1935) ने "कार्य–संतुष्टि को मनोवैज्ञानिक, शारीरिक तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों के ऐसे संयोजन के रूप में समझाया, जो व्यक्ति को अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का अनुभव कराता है।"

डी. सिन्हा, व के. सी. शर्मा के अनुसार, "व्यावसायिक संतुष्टि का संबंध व्यक्ति की नौकरी से है, तथा समाज में नौकरी में सामान्य तालमेल से भी काम का संबंध हैं।

के. जी. सैय्यद के अनुसार, "अध्यापन आज भी अनाकर्षक व्यवसाय हैं, जिसे अधिकतर लोग अंतिम व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हैं।"

कार्यात्मक परिभाषा कार्य संतुष्टि के संदर्भ में, "कार्य संतुष्टि एक सुखद या सकारात्मक एवं भावात्मक स्थित है, जो किसी की नौकरी या नौकरी के अनुभवों के मूल्यांकन से उत्पन्न होती है।"

सम्बंधित शोध साहित्य की समीक्षा:

राय, ए. (2025). के द्वारा शिक्षकों की सावेंगिक बुद्धि का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता एवं कार्यसंतुष्टि पर प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन किया। उद्देश्य की पूर्ति हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत आने वाला सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का उपयोग किया हैं। प्रतिदर्श के चयन के लिए 445 शिक्षकों का चयन स्तरीकृत समानुपातिक यादृच्छिक प्रतिचयन पद्धति का प्रयोग किया गया हैं। समंको का संचयन के लिए डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी जो कि प्रमापीकृत परीक्षण का प्रयोग किया। आंकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन, टी–परीक्षण की गणना की गयी हैं। निष्कर्ष के रूप में उच्च एवं निम्न सावेंगिक बुद्धि वाले शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर हैं। अर्थात उच्च सावेंगिक बुद्धि वाले शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि, निम्न सावेंगिक बुद्धि वाले शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों से अधिक हैं।

गहलोत, जी. एस. (2024). ने उच्च माध्यमिक स्तर के निजी व सरकारी विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की कार्यसंतुष्टि व शिक्षक प्रभावशीलता पर कृतज्ञता के प्रभाव के संदर्भ में अध्ययन किया। शोध उद्देश्य के निमित्त वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। न्यादर्श के रूप में 400 शिक्षकों को यादृच्छिक (लॉटरी) प्रतिदर्श प्रणाली से चयनित किया गया। संमको के संकलन हेतु डॉ. निधि मदान और उमेंदर मलिक द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि स्केल का अंग्रेजी माध्यम में प्रयोग किया। सांख्यिकीय के व्याख्यात्मक रूप में मध्यमान, मानक विचलन, सहसंबंध का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष के रूप में निजी विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि व कृतज्ञता के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया। उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों के शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि व कृतज्ञता के मध्य सार्थक सहसंबंध पाया गया।

कुमार, ए. (2024). ने उच्च प्राथमिक स्तर पर परिषदीय तथा गैरपरिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा कार्यसंतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया। शोध के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया। न्यादर्श के चयन हेतु विद्यालयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से 1600 अध्यापकों का चयन उद्देश्यपूर्ण आकस्मिक विधि से किया गया हैं। आंकड़ों को संग्रहित करने के लिए डॉ. मीरा दीक्षित द्वारा निर्मित प्रमापीकृत कार्यसंतुष्टि मापनी का उपयोग किया हैं। समंको का विश्लेषण हेतु मध्यमान, माध्यिका, प्रमाणिक विचलन, क्रांतिक अनुपात, सहसम्बन्ध

गुणांक एवं आयात चित्र का प्रयोग किया गया हैं। परिणाम के रूप में पाया कि परिषदीय तथा गैर परिषद विद्यालयों के पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर हैं।

सिंह, ए. के. (2024). के द्वारा अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा के परिक्षेत्र में कार्यरत् शारीरिक शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि और नेतृत्व क्षमता का सर्वेक्षण अध्ययन किया। शोध के निमित्त वर्णनात्मक विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया एवं प्रतिदर्श के चयन प्रक्रिया में यादृच्छिक विधि से 100 शिक्षकों का न्यादर्श के रूप में चयन किया। समंको हेतु सूचना संकलन के लिए डॉ. विकास कुन्डु का व्यवसायिक संतुष्टि मापनी का उपयोग किया। संमको के विश्लेषण में प्रयुक्त सांख्यिकीय के रूप में टी–परीक्षण, सहसम्बन्ध, का प्रयोग किया। निष्कर्ष के रूप में पाया कि जो शिक्षक अपने व्यवसाय में संतुष्ट हैं तो उनमें नेतृत्व करने की क्षमता अच्छी होती है। अतः ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले शिक्षकों की अपने व्यवसाय के प्रति संतोष एवं सार्थक अंतर है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:

- शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय की अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ:

- Ho1 शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
- Ho2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

परिसीमांकन

शोधार्थी ने नियत समय, धन, श्रम की सीमितता को ध्यान में रखते हुए चयनित शोध समस्या को निम्न बिंदुओं में परिसीमित किया है–

- प्रस्तुत अध्ययन में मध्य प्रदेश के ग्वालियर जिले को शामिल किया गया हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल चयनित शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों तक सीमित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन केवल उच्च माध्यमिक विद्यालयों पर केंद्रित हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन में केवल कार्य–संतुष्टि मापनी के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग किया गया हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन विशेषत: कार्य–संतुष्टि तक सीमित है, अन्य मनौवैज्ञानिक पहलुओं को शामिल नहीं किया गया हैं।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त प्राविधि:

प्रस्तुत अनुसंधान में वर्णनात्मक अनुसंधान के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि को अपनाया गया हैं। आंकड़े संग्रह करने के उद्देश्य से यादृ च्छिकी विधि का चयन किया गया है।

शोध का प्रकार**:** प्रस्तुत शोध अध्ययन प्रकृति वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक प्रकार की हैं।

समष्टि एवं न्यादर्श**:**

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के कुल 600 (300 शासकीय एवं 300 अशासकीय) अध्यापकों को सरल यादृच्छिक विधि द्वारा चयन किया गया हैं। जिन में से शासकीय विद्यालयों से (150 पुरुष व 150 महिला) अध्यापक इसी प्रकार अशासकीय विद्यालय से (150 पुरुष व 150 महिला) अध्यापकों को अध्ययन में शामिल किया गया हैं।

शोध उपकरण**:**

प्रस्तुत अनुसंधान में आंकड़ों के संकलन के निमित्त डॉ. अमर सिंह एवं डॉ टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया गया हैं।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी**:**

प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के विश्लेषण के निमित्त निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया।

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी–परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या**:** प्रस्तुत शोध आंकड़ों का विश्लेषण निम्नवत हैं।

उद्देश्य 1. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक का अध्ययन करना।

Ho1- शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 1 शासकीय व अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य, प्रायिकता मान

विद्यालय के प्रकार	अध्यापक की संख्या **(N)**	मध्यमान **(Mean)**	मानक विचलन **(SD)**	मुक्तांश **(df)**	टी–मान	प्रायिकता मान **(P-Value)**	सारणी मान	परिणाम
शासकीय	**300**	**78.1**	**10.7**	**598**	**1.10**	**.273**	**.05** सार्थकता	**.05** व **.01** सार्थकता स्तर पर असार्थक
अशासकीय	**300**	**77.1**	**11.8**					

सारणी मान- **.05** सार्थकता स्तर पर – **1.96**

.01 सार्थकता स्तर पर – **2.58**

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, October 2026 Impact Factor: 8.2

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान 78.1 तथा मानक विचलन 10.7 और अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान 77.1 तथा मानक विचलन 11.8 हैं। जिससे पता चलता है कि शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि (मध्यमान 78.1), अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि (मध्यमान 77.1) से तुलनात्मक रूप से अधिक है इस प्रकार का परिणाम बार चित्र–1 में प्रदर्शित है।

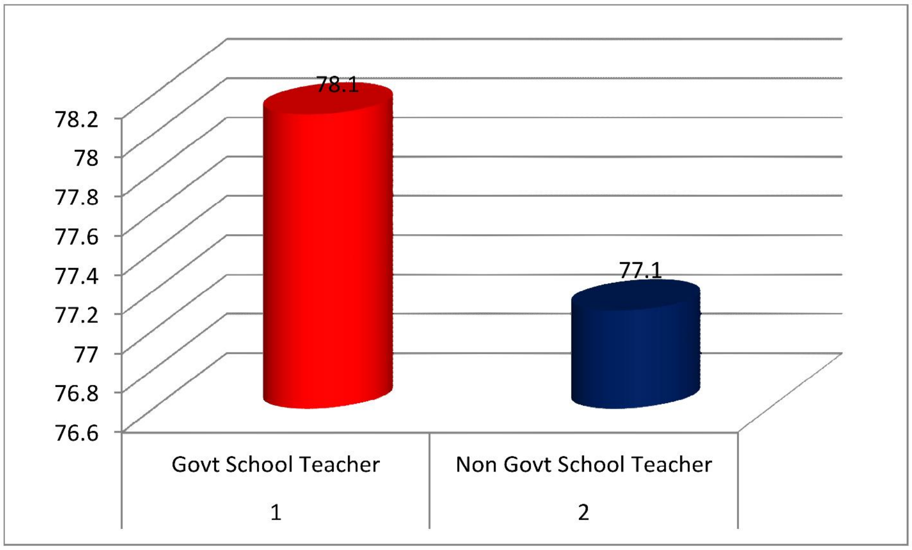

प्रस्तुत अध्ययन में शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापको की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से टी–परीक्षण लगाया तो टी–परीक्षण का मान 1.10 आया जो 598 के स्वतन्त्रता (df) के अंश पर .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 तथा .01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.58 से कम हैं। जिससे पता चलता है कि टी–परीक्षण का मान दोनों सार्थकता स्तर पर सार्थक नही हैं। इसकी पुष्टि पी–मान .273 से भी होती हैं क्यों की यह .05 से अधिक हैं जो .05 व .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित नही करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना Ho1 ,"शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापको की कार्य–सन्तुष्टि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।" अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है। परिणाम से पता चलता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है अर्थात हम कह सकते हैं कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि लगभग समान हैं।

उद्देश्य 2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

Ho2 उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।

तालिका 2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान, मानक विचलन व टी– मूल्य व प्रायिकता मान

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-38820

समूह	अध्यापक की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मुक्तांश	टी– मान	प्रायिकता मान	सारणी मान	परिणाम
पुरुष शिक्षक	**300**	**77.2**	**11.7**	**598**	**0.87**	**.38**	**.05** सार्थकता	**.05** व **.01** सार्थकता स्तर पर असार्थक
महिला शिक्षक	**300**	**78.0**	**10.8**					

सारणी मान- **.05** सार्थकता स्तर पर – **1.96**

.01 सार्थकता स्तर पर – **2.58**

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापक की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान 77.2 तथा मानक विचलन 11.7 और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के महिला अध्यापक की कार्य–संतुष्टि का मध्यमान 78.0 तथा मानक विचलन 10.8 हैं। जिससे पता चलता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का (मध्यमान 77.2), एवं उच्च माध्यमिक विद्यालयों के महिला अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि का (मध्यमान 78.0) से तुलनात्मक रूप से अधिक है इस प्रकार का परिणाम बार चित्र –2 में प्रदर्शित है।

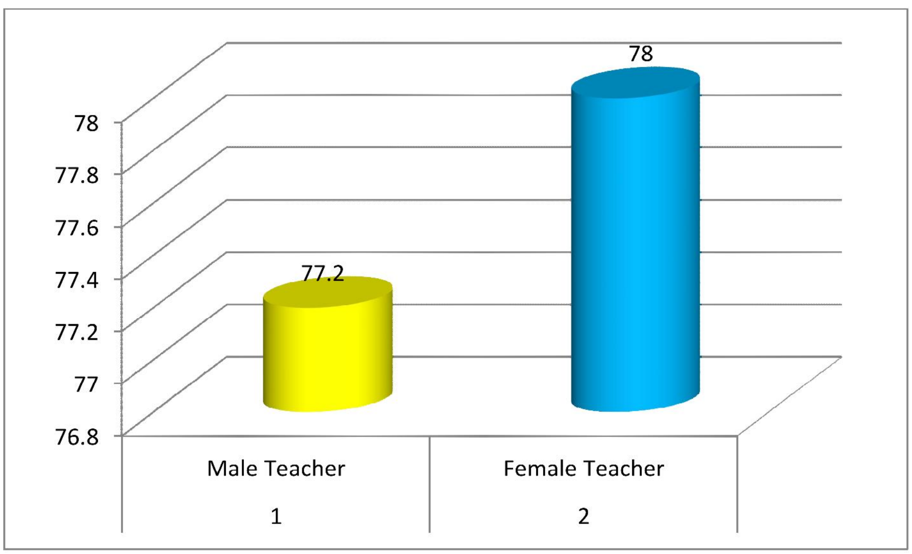

प्रस्तुत अध्ययन में पुरुष एवं महिला उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापको की कार्य–सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से टी–परीक्षण लगाया तो टी–परीक्षण का मान 0.87 आया जो (df) 598 के स्वतन्त्रता के अंश पर .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 1.96 तथा .01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.58 से कम हैं। जिससे पता चलता है कि टी–परीक्षण का मान दोनों सार्थकता स्तर पर सार्थक नही हैं। इसकी पुष्टि पी–मान .38 से भी होती हैं क्यों की यह .05 से अधिक हैं जो .05 व .01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अन्तर को प्रदर्शित नही करता है।

अतः प्रस्तुत अध्ययन की शून्य परिकल्पना **Ho2** ,"उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है।" अतः शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है। परिणाम से पता चलता है कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात हम कह सकते हैं कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य–संतुष्टि लगभग समान हैं।

निष्कर्ष**:**

- प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं हैं।
- शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का मध्यमान (78.1), तथा अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का मध्यमान (77.1) से तुलनात्मक रूप से अधिक हैं।
- शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का t–मान 1.10 एवं P–मान .273 प्राप्त हुआ हैं। जो यह दर्शाता हैं कि दोनों समूहों के मध्य कार्य सन्तुष्टि में .05 एवं .01 स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं हैं। इस लिये दोनों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य सन्तुष्टि लगभग समान हैं।
- प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होते हैं। कि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला अध्यापकों के कार्य संतुष्टि में सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अंतर नहीं हैं।
- पुरुष अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का मध्यमान (77.2), तथा महिला अध्यापकों के कार्य संतुष्टि का मध्यमान (78.1) से तुलनात्मक रूप से कम हैं।
- उच्च माध्यमिक विद्यालय के पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि में तुलनात्मक अध्ययन के रूप में t–मान 0. 87 एवं P–मान .38 प्राप्त हुआ हैं। जो दर्शाता है कि दोनों समूहों के मध्य कार्य संतुष्टि में .05 व .01 स्तर पर सार्थक अंतर नहीं है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि पुरुष एवं महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि लगभग समान है।

अनुसंधान कार्य की उपादेयता**:**

अध्यापक कोई मकान बनाने वाला राज मिस्त्री नहीं हैं। बल्कि राष्ट्र का भविष्य निर्माता के रूप में स्वीकार हैं। वह समाज की नवीन पीढियों के उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करता हैं। अध्यापक की कार्य कुशलता से गढा जाने वाला विद्यार्थी हमारे देश में सभ्य एवं संस्कृति युक्त नागरिक बनने की कल्पना की गई हैं। यदि अध्यापक मन में ठान लें तो विषम परिस्थितियों में भी सकारात्मक शिक्षण कार्य करके सुखद परिणाम दे सकता हैं। इस समय अध्यापकों के लिए तकनीकी कौशल युक्त प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाए जिससे बदलते परिवेश में नवीन व्यावहारिक तकनीकी एवं वैज्ञानिक ज्ञान का समागम हो सके जिससे नव विद्यार्थियों को एक कोलैबोरेटिव प्रकार का ज्ञान को स्त्रोत प्राप्त कर सकें। नई शिक्षा नीति में इस प्रकार की संकल्पना भी है कि शिक्षा में जन–जन की हिस्सेदारी हों।

प्रस्तुत अनुसंधान में अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के पुरुष तथा महिला अध्यापकों के संदर्भ में अध्ययन किया गया है इन सभी प्रदत्तों की दृष्टि से इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

सिद्ध होता हैं। इस लिए अध्यापकों के कार्य संतुष्टि के अभाव में हम अच्छी शिक्षण व्यवस्था की संकल्पना नहीं कर सकते हैं। इसलिए हमें अनुसंधान के माध्यम से कार्य संतुष्टि को विकसित करने के लिए धरातल पर जाकर गहन शोध करने होंगे इसी लिए उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि को जानना एवं उन्हें सुझाव देना आवश्यक हैं।

शैक्षिक निहितार्थ:

प्रस्तुत अध्ययन से संकेत मिलता है कि शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि लगभग समान हैं। समान कार्य संतुष्टि से यह स्पष्ट नहीं हो पता है कि कार्य संतुष्टि का स्तर क्या है। उच्च या निम्न है यदि कार्य संतुष्टि उच्च स्तर की है तो वह कितने प्रतिशत उच्च स्तर की कार्य संतुष्टि रखने वाले अध्यापकों का प्रतिशत कितना हैं। सरकार को इस पर भी ध्यान आकर्षित करने की जरूरत है, और उसके लिए कुछ गुणवत्ता युक्त तकनीकी सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए जिससे शिक्षकों की कार्य संतुष्टि समान हो पर उच्च लेवल की होनी चाहिए शासन को यह ध्यान देना हैं। कि समान शैक्षिक तकनीकी गुणवत्ता युक्त प्रशिक्षण दिया जाए जिससे यह समान कार्य सन्तुष्टि बनी रहे। उच्च कार्य संतुष्टि रखने वाले अध्यापकों का प्रतिशत अधिक होना चाहिए जिससे हमारे विद्यालयों के विद्यार्थियों को अच्छी गुणवत्ता युक्त शिक्षा देने के लिए अध्यापक मन और मस्तिष्क से तैयार रहें।

संदर्भ सूची:

- कोठारी, सी. आर. (2024). शोध पद्धति (2 वॉ संस्करण), न्यू एज इंटरनेशनल पब्लिशर्स।
- गुप्ता, एस. पी. एवं गुप्ता, ए (2023). भारत का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
- शर्मा, आर. एन. (2020). भारत में शिक्षा का इतिहास (5वॉ संस्करण), विनोद पुस्तक मंदिर।
- गुप्ता, एस. पी. (2020). भारत में शिक्षा (10वॉ संस्करण) ,विनोद पुस्तक मंदिर।
- लाल, आर. वी. (2020). भारत में शिक्षा का इतिहास (14 वॉ संस्करण), विनोद पुस्तक मंदिर।
- यादव, आर. एवं वाजपेयी, एन. (2024). माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन,(JAAFR) जर्नल, 2(12), 2024, पृ. 34–42।
- त्रिपाठी, आर. एवं वाजपेयी, एन. (2016). प्राथमिक स्तर के शिक्षकों तथा शिक्षिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, शोध धारा, 14(1), पृ.186–189।
- कुमार, ए. एवं सिंह, आर. के. (2022). उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन, इंटरनेशनल जर्नल आफ रिसर्च इन एकेडमिक वर्ल्ड, 1(16), पृ. 45–48।
- कुमारी, पी. (2021). उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन, स्कॉरली रिसर्च जर्नल, 9(45). पृ. 11152–11153।
- पाल, एस. सी. (2023). राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन, शोध समागम जर्नल, 04(03), पृ. 219–226।
- Hoppock, R. (1935). Job Satisfaction. Harper & Brothers.

- Locke, E. A. (1969). What is job satisfaction? Organizational Behavior and Human Performance, 4(4), 309–336. https://doi.org/10.1016/0030-5073(69)90013-0
- Locke, E. A. (1976). The nature and causes of job satisfaction. In M. D. Dunnette (Ed.), Handbook of Industrial and Organizational Psychology (pp. 1297–1349). Rand McNally.
- https://www.uncsco.org